सभार: एएफएस-यूएसए

भारत के एक्सचेंज छात्र अमेरिका में चमके

एलिज़ाबेथ केलर

अमेरिका के दक्षिणी राज्य जॉर्जिया ने अपने नए किशोर भाषण चैंपियन की घोषणा कर दी है। अटलांटा में ग्रेडी हाई स्कूल की एक छात्रा ने पूरे राज्य से सेकेंडरी स्कूल के प्रतिद्वंद्वियों को मात दे दी। वह भारत के पश्चिमी राज्य गुजरात की है।

अरुंधती श्रीधर गुजरात से एक एक्सचेंज छात्रा हैं, जो अमेरिकी जीवन का अनुभव करने और अमेरिकियों को अपने देश के बारे सिखाने के लिए जॉर्जिया आईं। लगता है कि वह इससे भी आगे बढ़ गई हैं। उनके भाषण उन्हें जॉर्जिया से साउथ कैरोलिना, नॉर्थ कैरोलिना, टेक्सास, न्यू मेक्सिको और कन्सास तक ले गए, जहां उन्होंने नेशनल फॉरेंसिक लीग की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा लिया।

श्रीधर भारत से गए उन 32 विद्यार्थियों में एक हैं, जो 2006-07 के दौरान यूथ एक्सचेंज और स्टडी प्रोग्राम (यस) के माध्यम से अमेरिकी स्कूलों में आए। यह एक प्रतिस्पर्धी स्कॉलरशिप है जिसका खर्च विदेश विभाग उठाता है। यह दूसरा साल था जब भारत से छात्रों ने इस प्रोग्राम में हिस्सा लिया। प्रोग्राम अच्छी-खासी मुस्लिम आबादी वाले देशों से किशोरवय के विद्यार्थियों को आपसी समझबूझ बढ़ाने और नेतृत्व कौशल विकसित करने के लिए अमेरिका लाता है।

भारतीयों ने अपने देश के बारे में बनी धारणाओं को दूर करने का आनंद लिया। उन्होंने बताया कि बहुत से अमेरिकियों का यह मानना गलत है कि भारत में सिर्फ गांव हैं जहां ऊंट, हाथी और गाय सड़कों पर लावारिस घूमते हैं या फिर यह कि भारत में हर कोई हिंदू है और सारा भारतीय खाना मसालेदार होता है।

छात्रों ने अमेरिकियों में भारत के बारे में इन गलत धारणाओ को सही किया, वहीं वह खुद भी अमेरिका के बारे में कुछ गलत धारणाएं लेकर आए थे। गुजरात के ही जॉर्ज थॉमस ने कहा कि उन्होंने बहुत ज़्यादा टेलिविजन देखा था, खासकर न्यू यॉर्क की पृष्ठभूमि पर बना फ्रेंड्स एंड सीनफील्ड और सैन फ्रांसिस्को की पृष्ठभूमि पर बना फुल हाउस। उन्हें यह देखकर अचंभा हुआ कि टेलिविजन से अमेरिका की बड़े शहर की बनी धारणा के विपरीत अमेरिका में पासो रोबल्स, कैलिफोर्निया जैसे छोटे कस्बे हैं, जिसकी आबादी सिर्फ 27,000 है और जहां उन्होंने साल भर का समय गुजारा।

गुजरात की निकिता नाथ ने कहा कि उन्होंने अमेरिकी छात्रों को उससे ज़्यादा गंभीर पाया, जितनी उन्होंने कल्पना की थी। वे बहुत किताबें पढ़ते हैं और अच्छे कॉलेजों में जाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। श्रीधर ने देखा कि अमेरिकी एक-दूसरे के प्रति स्नेह को शब्दों में भारतीयों की तुलना में ज़्यादा खुलकर व्यक्त करते हैं।

भारतीय छात्रों ने अमेरिकी जीवन के वे अन्य पहलू बताए जिन्होंने उन्हें आकर्षित किया: डाक लाने वाले बहुत विनम्र हैं, कारें भारत की तुलना में पैदल चलने वालों का ज़्यादा ध्यान रखती हैं, हवा ज़्यादा साफ है और सांस लेना ज़्यादा आसान है। उन्होंने पहली बार बर्फ गिरती देखी और इसे अद्भुत बताया। नाथ को वसंत का मौसम और ज़्यादा अच्छा लगा। उन्होंने साल भर राई, न्यू यॉर्क में बिताया, जहां सर्दियां ज्यादा कड़ाके की ठंड वाली हो सकती हैं।

नकारात्मक पहलू के लिहाज से छात्र यह देखकर चकित थे कि अमेरिकी स्कूलों में लंच के वक्त कुछ छात्र समूहों में बंट जाते हैं जो नस्ल पर आधारित होते हैं। श्रीधर ने कहा कि वह एक वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए यात्रा के दौरान एक अश्वेत छात्रों के बारे में अभद्र टिप्पणी सुन कर निराश हुई क्योंकि वह इस अमेरिकी मान्यता का सम्मान करती हैं कि हर कोई बराबर है।

भारतीय छात्रों ने अमेरिका में आधुनिक प्लेसमेंट साहित्य, पर्यावरण विज्ञान और त्रिकोणमिति समेत कठिन विषयों का अध्ययन करने के साथ ही अपनी निजी दिलचस्पियों को आगे बढ़ाने के मौकों का भी फायदा उठाया। थॉमस ने अमेरिकी स्कूलों के विविधतापूर्ण पाठ्यक्रम का फायदा उठाते हुए ड्रामा का अध्ययन किया और तीन नाटकों में अभिनय किया। नाथ अपनी बाद की पढ़ाई में विज्ञान पर केंद्रित करना चाहती हैं और उन्होंने फोटोग्राफी सीखी। और चूंकि श्रीधर कम्युनिकेशन के एक 'मैग्नेट स्कूल' में थीं, उन्होंने स्पीच और वीडियो प्रोडक्शन में कोर्स किए। श्रीधर शुरू में स्पीच क्लास में अपने समकक्षों की भाषणकला से आतंकित थीं, लेकिन उन्होंने अपनी पृष्ठभूमि का इस्तेमाल करते हुए बढ़िया भाषण लिखे जिन्हें उन्होंने अनेक प्रतियोगिताओं के माध्यम से निखारा। 'द लिटिल नोट्स इन लाइफ' नामक उनका भाषण भारत में पाठ्य पुस्तकों के शुरू में लिखे नोट्स के बारे में है। इनमें से एक मोहनदास करमचंद गांधी का एक यादगार उद्धरण है।

जून में भारत लौटने के लिए हवाई अड्डे के लिए रवाना होने से पहले छात्रों ने पाठ्यक्रम से बाहर की उन गतिविधियों की चर्चा में मशगूल हो गए जिनमें उन्हें बेहद मजा आया- स्नोबोर्डिंग, व्हेल वाचिंग, मार्टिन लूथर किंग सेंटर का भ्रमण, एक मरीन बायोलॉजिस्ट के साथ एक व्हेल की चीरफाड़ और पौधों के अध्ययन के लिए एक नेचर सेंटर में स्वैच्छिक कार्य।

नाथ ने कहा, ''यहां ज़िंदगी में भरपूर अवसर हैं। आप कुछ भी कर सकते हैं। मैंने उन सभी अवसरों की तलाश करने की कोशिश की है जो मैं कर सकती हूं।'' उनका सोचना है कि अनेक अमेरिकी किशोर सेकेंडरी स्कूल के दौरान कितनी भी रुचियों में ध्यान लगा सकते हैं। छात्रों के भारत लौटने की पूर्व संध्या पर उनसे बातचीत करते हुए विदेश विभाग में कई साल से यूथ एक्सचेंज को समन्वित करने वाले रॉबर्ट पेरिस्को ने उनसे 'साहस और अन्वेषण की अपनी प्रवृत्ति' को कायम रखने का आह्वान किया।

भारतीय छात्र स्मृति चिह्नों से भरे हुए बैगों के साथ विमान में सवार हुए। उनमें अमेरिकी मित्रों की स्क्रैप बुक के पन्ने, भारत आने का वादा करने वाले मेजबान परिवारों के पते, बाद में उन्हें अमेरिकी विश्वविद्यालों में प्रवेश दिला सकने वाले टेस्ट स्कोर, भाषण प्रतियोगिताओं में मिलने वाली ट्रॉफियां और नाथ की बात करें तो 5,000 इलेक्ट्रॉनिक फोटो शामिल थे।

थॉमस ने फोटो नहीं लिए। उनका कहना था, ''यह सब यहां है, मेरे दिमाग में और मेरे दिल में।''

ऊपर: एक्सचेंज छात्रा अरुंधति श्रीधर (दाएं) और साथी छात्रा भाषण प्रतियोगिता में जीते पुरस्कारों के साथ।

दाएं: निकिता नाथ (सबसे बाएं) अमेरिका यात्रा के दौरान अपनी साथी एक्सचेंज छात्राओं के साथ।

एलिज़ाबेथ केलर *यूएसइनफ़ो की कार्यालय लेखिका हैं।*

सभार: एएफएस-यूएसए